DR. (SHRIMATI) BHARATI RAY (WEST BENGAL): Madam, I also associate myself with his Special Mention. May I take a minute, Madam?

THE DEPUTY CHAIRMAN: No. You have associated yourself with it, and your association is appreciated, by everybody, I am sure, because this is how I can finish the work!

RE: AK-47 ASSAULT RIFLES LYING UNUSED FOR WANT OF AMMUNITION

श्री नरेन्द्र मोहन (उत्तर प्रदेश): मैडम, मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूं कि आपने मुझे अवसर दिया।

उपसभापति: तालियां क्यो बजी? मेडन है?

श्री नरेन्द्र मोहन: ये जो राइफलें एक लाख खरीदी गयीं 1993 में उनके लिए एम्युनिशन अभी तक नहीं आ रहा है। एक अजीब बात है कि जहां एक ओर हमारा प्रतिरक्षा मंत्रालय सफलता पा रहा है रूस से प्रोद्योगिकी लेने में और विमान लेने में, बधाई का पात्र बन जाता है वहीं उस मंत्रालय में एक ऐसी स्थिति भी उत्पन्न हो गयी है कि जिसके कारण से बहुत से हथियार जो खरीदे जा चुके हैं उनका इस्तेमाल नहीं होता है। केवल यह ए॰के॰47 की बात ही नहीं है बल्कि अगर इसी वर्ष की आडिट रिपोर्ट को देखा जाए तो बहुत से ऐसे मामले सामने आएंगे। मैं यह दरखास्त करना चाहता हूं कि यह मामला बड़ा गंभीर है क्योंकि ए॰के॰47 राइफलें जो खरीदी गयी है वे इस इरादे से खरीदी गयी थीं कि उनसे हम आतंकवादियों का सामना करेंगे। हमारी बार्डर सिक्योरिटी फोर्स के पास, हमारी आर्मी के पास अच्छे किस्म के हथियार नहीं थे इसी लिए ए॰के॰ 47 राइफलें खरादी गयीं। राइफलें तो आ गयी हैं लेकिन उनकी गोलियां नहीं आईं। राइफलें हमने रोमानियां से खरीदीं, पहले बल्गारिया से खरीदने वाले थे लेकिन खरीदी रोमानिया से और हमने गोलियों के लिए करार किया उत्तरी कोरिया के साथ। उत्तरी कोरिया की एक कम्पनी ने कह दिया कि उनके पास अभी हालत ऐसे नहीं हैं कि वे हमें गोलियां दे सकें। परिणाम यह हुआ है कि हथियार आ गए और वे हथियार न तो बार्डर सिक्योरिटी के पास जा सके न तो सेना के पास जा सके।

श्री हेच॰ हनुमनतप्पा (कर्नाटक): मैडम, यह तो डिफेंस की इन्फारमेशन है कि हमारे पास हथियार है, बारूद नहीं है। यह इन्फारमेंशन पार्लियामेंट से बाहर क्यों जाए।

उपसभापति: अखबार में खबर आयी है और वे अखबारवाले हैं।

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी (उत्तर प्रदेश): इसी वजह से कि वह कमी पूरी हो जाए देश में—मैं समझता हूं कि यह उचित है। हनुमनतप्पा जी बड़े अनुभवी है और ऐसे मामले उठाते रहे हैं। अब एक सदस्य अपने पहले भाषण में ऐसा मुद्दा उठा रहे हैं जो कि देश की सुरक्षा से संबंधित है।

उपसभापति: मेडन स्पीच में वे भी ए॰के॰47 चला रहे हैं बगैर गोलियों के तो चलाने दीजिए।

श्री हेच॰ हनुमनतप्पा: आई एम सारी।

उपसभापति: उसमें तो गोलियां भी नहीं है। उनकी तो ए॰के॰47 एकदम खाली है।

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी: ऐसा है कि इसमें मेडन वैशफुलनेस तो नहीं है। उन्होंने एक ऐसा सवाल उठाया है।

उपसभापति: मैं तो खुश होउंगी कि सब ही मेडन स्पीच करें हाउस में ताकि कोई डिस्टरबैंस नहीं हो।

श्री नरेन्द्र मोहन: महोदया, आज स्थिति क्या है? अभी इन्सरजेंसी जिस तरह उत्तर पूर्वी राज्यों में बढ़ रही है, विशेष रूप से आसाम में बढ़ रही है, बोडोलैंड में बढ़ रही है और नागालैंड में बढ़ रही है और हम उसका मुकाबला इसलिए नहीं कर पा रहे हैं कि वहां जो बार्डर सिक्योरिटी फोर्स है उनके पास आधुनिकतम हथियार नहीं है। यह बात जो कही गयी है यह वहां आसाम के अधिकारियों ने और आसाम के मुख्य मंत्री तक के द्वारा कही गयी है। अब उनको हथियार कैसे पहुंचाए जाएं यह एक बड़ा अहम मसला है। आप काश्मीर की बात ले लीजिए। काश्मीर में भी इन्सरजेंसी पूरी तरह से जागरूक है। वहां के भी पुलिस और बार्डर सिक्योरिटी फोर्स के पास हथियार नहीं हैं सेना के पास जरूर है लेकिन बार्डर सिक्योरटी फोर्स के पास उस अच्छे किस्म के हथियार नहीं है जैसी अच्छी किस्म के हथियार उन आतंकवादियों के पास हैं जो वहां जाकर गड़बड़ियां पैदा करते है। ये ऐसे हालात हैं जिनके ऊपर हमें नजर डालनी होगी। सबसे अफसोस की बात यह है कि भारत में जो आयुध कारखाने हैं वे अच्छी किस्म की असाल्ट राइफलें नहीं बना पाते हैं। ऐसा क्यों है? भारत में जो भी हथियार के कारखाने हैं उनके यहां जो हथियार बनते हैं उनकी किस्म बहुत घटिया हो गयी है। यह बात मेरी नहीं है यह आडिट रिपोर्ट्स की बात है।

1.00 P.M.

जो इसी वर्ष की आडिट रिपोर्ट में है। यह चिंता की बात है। जैसा कि आडिट रिपोर्ट में कहा गया है। मैं उस हिस्से को पढ़ना चाहूंगा:

"Production of defective ammunition— From July 1990, Ordance Factory Chanda undertook bulk production of a tank ammunition. They have been found defective."

It is according to audit report 1995-96.

"Ordance Factory Board placed four extracts between January, 1985 and July, 1989 on Ordance factory, Dehu Road for manufacture and supply of 37,891 numbers of a bomb to the Army and they have been found defective."

Then there is idling of equipment because of defective contracts. Then there is supply of defective wheel tubes. They are all affecting our defence preparedness or they are affecting our Army. Then another report says, "Inordinate delay in repair of imported ammunition." It is stated—

"It is, thus seen that 34396 rounds of imported ammunition valued at Rs. 30.76 crores, held in repairable condition since 1982 could not be got repaired before expiry of the life of the propellant and primers."

Then there is another one, "Non-utilisation of radio equipment sets". It is stated—

"The Ministry of Defence in October, 1986/September, 1987 placed orders on a foreign firm for supply of 375 numbers of radio equipment sets at a total cost of Rs. 41.39 crores and they have not been used."

अब जब यही स्थिति है, मैडम, आडिट रिपोर्ट में तो इस तरह की चीजें आ जाती हैं, लेकिन शायद प्रतिरक्षा मंत्रालय के अधिकारी उस ओर ध्यान नहीं दे पाते हैं। इस समस्या का निराकरण तब हो सकता है जब इस संसद् की एक विशेष समिति बैठे और प्रतिरक्षा के ये जो गंभीर मामले हैं उनकी जांच करे। कोई तो इस बात का जवाबदेह होना चाहिए कि आखिर प्रतिरक्षा मंत्रालय द्वारा जो हजारों करोड़ रुपये के हथियार खरीदे जाते हैं उसमें से कितने हथियार वास्तव में इस्तेमाल में आ पाते हैं और कितने हमारे इस्तेमाल में नहीं आ पाते हैं। जो अभी हालत पैदा हो गए हैं उससे तो ऐसा लगता है कि बहुत खास हथियार जैसे ए॰के॰47 है, लगभग साढ़े तीन सौ करोड़ रुपये की ए॰के॰47 जो खरीदी गई वे बेकार पड़ी हुई है। महोदया, मैं मुआफी चाहता हूं, समय कम है, फिर भी आपने मुझे वक्त दिया, इसके लिए मैं आपका बहुत आभारी हूं। धन्यवाद।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now it is lunch hour. We have already taken three more minutes. There are 12 Special Mentions and one more Zero Hour submission. I don't know whether Members want to speak.

12 हैं और उसके बाद हाउस में दो बजे तो हम लोगों को मिलना ही है, इसलिए कि

we have to take up the clarifications on the statement made by Defence Minister.

DR. BIPLAB DASGUPTA (West Bengal): Let us complete the remainig also.

SHRI S. MUTHU MANI (Tamil Nadu): The clarifications on the statement should be taken up, Madam. We are waiting.

THE DEPUTY CHAIRMAN: That is what I want to do.

RE. EMERGENCE OF TERRORISM IN PUNJAB AND JAMMU AND KASHMIR

प्रो॰ विजय कुमार मल्होत्रा (दिल्ली): उपसभापति महोदया, मैं सदन का ध्यान एक बहुत ही गंभीर बात की ओर दिलाना चाहता हूं। जब से जम्मू और कश्मीर में चुनाव हुए हैं उस चुनाव के बाद पाकिस्तान की आइ॰एस॰आई॰ ने यह कोशिश शुरू की है कि फिर से आतंकवाद इस देश में फैले और फिर से आतंकवाद की लपटें पंजाब और काश्मीर में तेजी से आगे बढ़ें। कल ही फारुक अब्दुल्ला जी बम विस्फोट में बाल-बाल बचे। सारे देश को इस बात का बड़ा संतोष है कि ऐसी दुर्घटना उनके साथ नहीं हुई। परन्तु फारुक अब्दुल्ला जी पर यह हमला जो कल किया गया उसके 15 मिनट बाद वह वहां पर पहुंचे। वह शेख अब्दुल्ला के 91वें जन्म दिवस पर उनकी मजार पर जो फातिहा पढ़ने गए थे तब यह दुर्घटना हो सकती थी। परसों कुलगाम में सी॰पी॰आई॰ की जनसभा थी। वहां के एम॰एल॰ए॰ वहां पर भाषण दे रहे थे। वहां पर बम फैंका गया। 8 लोग मारे गए और 20 घायल हो गए। अंबाला में भी रेल विस्फोट हुआ है और उस रेल विस्फोट के अन्दर बहुत से लोग मारे गए हैं।

9 अक्टूबर को मुख्य मंत्री ने पद संभाला था। उसके बाद से लेकर 11 अक्टूबर, 16 अक्टूबर, 21 अक्टूबर, 28 अक्टूबर, 11 नवम्बर, 12 नवम्बर, 14 नवम्बर, 16, 22,